

Chapter 18

Question: How do these illuminating talks fulfil and help your purpose? The world has been listening for a long time to the gospel of revolt, the cult of attaining to supreme truth or destroying the self and thereby achieving the highest and the sublimest. But, what is the reaction, is it creative or recreative?

Krishnamurti: What do you mean by fulfilling? You ask whether these talks help you to fulfil. Do you think there is such a thing as fulfilment? It is only when you are thwarted that you want to fulfil. It is only when you want to become a judge or somebody that there is the fear of not fulfilling. But if you do not want to become anything, then there is no problem of fulfilment.

All of us want to become something, either in this world or in the next world, inwardly or outwardly, and our purpose is well defined because our desires are always compelling us towards a particular end which we call fulfilment. If we do not understand these desires, then when they are thwarted there is conflict, misery, pain, and so an everlasting search for fulfilment. But, when one begins to understand the ways of desire, the innumerable urges, conscious as well as unconscious, there is no question of fulfilling. It is the self, the 'me', that is always craving to fulfil, either as the 'great people of this land' or to fulfil inwardly—to become something, to attain liberation, moksha, or what you will. But if we understand the implications of desire—that is, the implication of the self, of the 'me'—then there is no question of fulfilling.

Question: Does not the emphasis on quieting the mind reduce creativity?

प्रश्न : हमें प्रबोधित करने वाली ये चर्चाएं आपके उद्देश्य को कहां तक सफल और संतुष्ट करती हैं? संसार बहुत लंबे समय से इस क्रांतिकारी संदेश को, अहम् के विनाश के माध्यम से परम सत्य को पाने, और उसके द्वारा सबसे उच्च और सबसे श्रेष्ठ तत्त्व की प्राप्ति करने के वचनों को सुनता आ रहा है। परंतु उसकी प्रतिक्रिया के रूप में क्या हो रहा है--यह सृजनात्मक है या मनोरंजन मात्र?

कृष्णमूर्ति : सफलता से आपका क्या अभिप्राय है? आप पूछते हैं कि क्या ये चर्चाएं आपको संतुष्टि प्रदान करने में सहायक होती हैं? क्या आप यह सोचते हैं कि संतुष्टि जैसा कुछ हुआ करता है? आप संतुष्टि तभी पाना चाहते हैं जब आपके प्रयास निष्फल होने लगते हैं। जब आप निर्णायक अथवा कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बनना चाहते हैं, केवल उसी स्थिति में असफल होने का भय जन्म लेता है। परंतु यदि आप कुछ भी नहीं बनना चाहते तो संतुष्टि का सवाल ही नहीं उठता।

हममें से प्रत्येक इस लोक में या परलोक में, आंतरिक या बाह्य धरातल पर कुछ-न-कुछ बनना चाहता है और हमारे ध्येय भलीभांति परिभाषित हुआ करते हैं क्योंकि हमारी कामनाएं सदैव उस विशिष्ट लक्ष्य की दिशा में चलने के लिए हमें बाध्य करती रहती हैं जिसे हम सफलता कहते हैं। यदि हम इन कामनाओं को नहीं समझते तो उनके कुंठित होने पर क्लेश, दुख और पीड़ा उत्पन्न होते हैं और फलस्वरूप संतुष्टि पाने की खोज अनवरत जारी रहती है। परंतु जब मनुष्य चेतन एवं अचेतन इन दोनों तलों पर कामना के तौर-तरीकों को, असंख्य उत्कंठाओं को समझने लगता है तो संतुष्टि का प्रश्न नहीं रह जाता। यह तो 'स्व', 'मैं' ही होता है जो 'इस देश के महानायकों' के रूप में या आंतरिक रूप से संतुष्टि पाने की लालसा से ग्रस्त रहता है--कुछ विशिष्ट बनने, निर्वाण या मोक्ष या आप जो नाम देना चाहें उसकी प्राप्ति के लिए लालायित रहता है। परंतु यदि हम कामना के सभी अंतर्तत्त्वों को, यानी 'स्व' के, 'मैं' के सभी निहितार्थों को, पूरी तरह समझ लेते हैं तो संतुष्टि का प्रश्न ही नहीं रहता।

प्रश्न : मन को शांत करने पर जोर दिए जाने से क्या सृजनशीलता का क्षय नहीं होता?

Chapter 18

Krishnamurti: What is creativity and what is understanding?

To understand creativity, there must be no fear. Is it not so? After all, most of our minds are imitative. We are ridden by authority, we have innumerable fears, conscious as well as unconscious. A mind so elaborate, so small, so petty, so conditioned—can such a mind be creative? It can only be creative in the deeper sense of the word—not in the sense of writing a couple of poems or painting some pictures—when you understand the whole process of fear. To understand fear, must you not search into the workings of your mind, must you not be watchful of the ways the mind imitates, why it copies authority? Only then is it possible for the mind to be creative.

Is the mind creative or is creativeness something entirely different? After all, what is the mind? Mind is the result of time, time being a process. Mind is the result of the past, the past being the culture, the tradition, the experience, the various economic and other unconscious influences; all that is the mind. Can the mind, which is the result of time, be creative? Is not creativeness something out of time, beyond time, and therefore beyond the mind? There is no 'Indian creativeness' or 'European creativeness.' Culture is not Indian or European, Occidental or Oriental, although the expression of it may be.

That creative something, that creative reality, that truth, God, what you will, is surely beyond time.

The mind that is the result of time cannot conceive or experience the

कृष्णमूर्ति : सृजनशीलता क्या है और समझ क्या है?

सृजनशीलता को समझने के लिए यह ज़रूरी है कि किसी भी तरह का भय न हो। क्या ऐसा नहीं है? क्योंकि वास्तव में हममें से अधिकांश के मन अनुकरण करने वाले होते हैं। हम सत्ता-मान्यता के तले दबे होते हैं। हममें चेतन एवं अचेतन असंख्य भय होते हैं। इतना जटिल, इतना क्षुद्र, इतना छोटा और संस्कारबद्ध मन—क्या ऐसा मन सृजनशील हो सकता है? एक-दो कविताएं लिख लेने के, या कुछ पेंटिंग बना डालने के अर्थ में नहीं बल्कि इस शब्द के गहरे अर्थ में यह केवल तब सृजनशील होता है जब आप भय की समूची गतिविधि को समझ लेते हैं। भय को समझने के लिए क्या यह आवश्यक नहीं है कि आप अपने मन के क्रियाकलापों की जांच करें? क्या आपको इस बारे में सजग नहीं रहना चाहिए कि मन कैसे अनुसरण में लग जाता है, मन क्यों प्रामाण्य की नकल करने लगता है? केवल तभी मन का सृजनशील होना संभव होता है।

क्या मन वस्तुतः सृजनशील होता है या सृजनशीलता बिल्कुल भिन्न विषय है? आखिरकार मन है क्या? मन समय का परिणाम है और समय एक प्रक्रिया है। मन अतीत का परिणाम है जबकि अतीत के अंतर्गत संस्कृति, परंपरा, अनुभव, विभिन्न आर्थिक एवं अन्य अचेतन प्रभाव सभी शामिल हैं—यह सब मन है। क्या मन, जो कि समय का परिणाम भर है, सृजनशील हो सकता है? क्या सृजनशीलता समय से बाहर का, काल से परे का विषय नहीं है, और इस प्रकार से क्या वह मन से परे का आयाम नहीं है? 'भारतीय सृजनशीलता' या 'पाश्चात्य सृजनशीलता' जैसा कुछ वास्तव में होता ही नहीं। संस्कृति भारतीय अथवा यूरोपीय, पश्चिमी अथवा पूर्व की नहीं होती, हालांकि इसकी अभिव्यक्ति इन रूपों में हो सकती है।

उस तरह की कोई सृजनशीलता, उस प्रकार की सृजनात्मक वास्तविकता, वह सत्य, ईश्वर या आप उसे जो भी नाम दें, निश्चय ही समय के पार है।

मन, जोकि समय का परिणाम है, अज्ञात की कल्पना या अनुभूति नहीं कर सकता। इसलिए यह

Chapter 18

unknown, so the mind has to free itself from the known, from knowledge, from its various experiences, traditions; then only is it capable of receiving the unknown. It is the unknown that is creative, not the mind that knows how to create.

ज़रूरी है कि मन अपने आपको ज्ञात से, ज्ञान से, अपने अनेक अनुभवों से और परंपराओं आदि से मुक्त कर ले, केवल तभी वह अज्ञात को ग्रहण कर पाने में समर्थ हो पाता है। अज्ञात ही सृजनशील होता है; सृजन कैसे किया जाता है, इसकी जानकारी रखने वाला मन सृजनशील नहीं होता।

Question: When there is conflict between the heart and the mind, which should be followed?

प्रश्न : जब हृदय एवं मन के बीच द्वंद्व हो तो किसकी सुनें?

Krishnamurti: Is conflict necessary? Is this not the question: What to follow, the mind or the heart?

कृष्णमूर्ति : क्या द्वंद्व होना ज़रूरी है? क्या प्रश्न मूलतः यही नहीं है कि किसके पीछे चलें--मन के या हृदय के?

First, let us understand if conflict is necessary. When conflict arises, then the question comes into being, 'Which should I follow, this or that?' Why do we have conflicts? Will conflict produce understanding?

पहले तो हम यह समझे कि क्या उनके बीच द्वंद्व होना ज़रूरी है? यदि उनके बीच द्वंद्व हो तो ही यह प्रश्न उठ सकता है कि किसके पीछे चला जाए : 'मैं इसका अनुसरण करूं या उसका?' हमारे भीतर द्वंद्व क्यों होता है? क्या द्वंद्व से समझ पैदा हो सकती है?

Perhaps you think I am not answering your question. All that you want to know is what you should follow. It is a very superficial demand, and you are satisfied if you are merely told what to do. Unfortunately, as most of us are today, we know only what to think, not how to think; therefore, the problem becomes very superficial. If we want to think out a question of this kind, we must put aside 'what to think' and inquire into 'how to think.' If we know how to think, the problem is not. But if you say, 'I must follow this,' or 'I must not follow that,' or 'Which shall I choose?' then the problem arises.

शायद आप सोच रहे होंगे कि मैं आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दे रहा हूँ। आप बस यही जानना चाहते हैं कि आप किसके पीछे चलें। यह एक बड़ी सतही मांग है और आप इतना भर बतला दिए जाने से संतुष्ट हो जाएंगे कि आपको इस बारे में क्या करना चाहिए। दुर्भाग्य से हममें से अधिकतर लोग आज ऐसे हैं--हम बस यही जानते हैं कि हम क्या सोचें, हम यह नहीं जानते कि किस प्रकार से सोचें। इसलिए समस्या छिछले स्तर पर ही रहती है। यदि हम इस तरह के किसी प्रश्न पर विचार करना चाहते हों तो हमें 'क्या सोचना चाहिए' को छोड़कर 'सोचा कैसे जाता है' इस बारे में पता लगाना होगा। यदि हमें यह पता चल जाए कि विचार किस तरह से किया जाता है तो समस्या पैदा ही नहीं होती। परंतु यदि आप कहते हैं : 'मुझे इसके पीछे जाना चाहिए' या 'मुझे उसकी तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए' अथवा 'मुझे इनमें से किसे चुनना चाहिए' तो समस्या उठ खड़ी होती है।

If you once really go into it clearly, deeply, the problem 'what to do' is a choice, is it not? Will choice clarify or put an end to conflict? Is there not

क्या आपको नहीं लगता कि यदि आप इस बारे में एक बार स्पष्टतापूर्वक, गहराई से खोजबीन करेंगे तो पाएंगे कि 'क्या करें' एक चुनाव है? क्या

Chapter 18

another way of acting, not between the two, but which is the understanding of the demands of the mind and the demands of the heart without saying which should be done. Between them all, I must not follow one or the other but understand each demand without comparison. Then only is it possible to free the mind from choice and therefore conflict.

All this requires a mind that is really attentive not only to what I am saying but also to its own processes, and understand them.

But very few of us want to do that. Very few of us are serious. We are serious about something superficial—diversion or excitement. But to really go into the whole problem of existence, of the ways of thought, requires not an hour's attention at a particular meeting but requires the understanding of the mind all the time as it lives and acts. For that, few of us are willing. In that, there is no risk, you do not get a good job, you do not become famous, you do not become successful. As long as we want to become famous, successful, powerful, popular, we create misery and conflict, which brings about war.

January 24, 1954

चुनाव द्वंद्व के कारण को स्पष्ट कर सकता है या द्वंद्व का अंत कर सकता है? कार्य करने का क्या ऐसा कोई अन्य तरीका नहीं है जो मन की मांगों और हृदय की मांगों की समझ से जुड़ा हो और जो यह न कहे कि इन दोनों में से किसको चुनना ठीक है? उन समस्त मांगों में से किसी एक या अन्य के पीछे चलने की अपेक्षा मुझे तुलनारहित हो कर प्रत्येक मांग को समझना होगा। केवल तभी यह संभव है कि मन को चुनाव से, अतः द्वंद्व से मुक्त किया जा सके।

इस सबके लिए ऐसा मन चाहिए जो वास्तव में अवधानपूर्ण हो, ध्यानपूर्वक हो—मैं जो कह रहा हूँ केवल उसके प्रति ही नहीं वरन् अपनी प्रक्रियाओं के प्रति भी अवधानपूर्ण हो और उन्हें समझे।

लेकिन हममें से कुछ ही ऐसा करने के इच्छुक होंगे। हममें से बहुत थोड़े लोग ही गंभीर हैं। हम सतही चीजों के बारे में ही गंभीर होते हैं—जैसे मनोरंजन, रौनकमेला, उत्तेजनाएं। परंतु जीवन की समूची समस्या के संबंध में, विचार के तौर-तरीकों के बारे में गहनतापूर्वक जांच-पड़ताल करने के लिए किसी विशेष सभा में घंटे भर शामिल होना काफी नहीं होता, इसके लिए तो मन की वह समझ ज़रूरी है जो अपने पूरे जीवनकाल में और समस्त कार्यों में सदा साथ रहे। हममें से बहुत कम लोग ही उसके लिए तैयार होते हैं। उसमें कोई खतरा नहीं उठाना पड़ता, आपको कोई बढ़िया नौकरी नहीं मिलती, आपको कोई सफलता हासिल नहीं होती। जब तक हम यश चाहते हैं, सफल, शक्तिशाली और लोकप्रिय होना चाहते हैं, तब तक हम दुख और क्लेश पैदा करते रहते हैं जो अंततः युद्ध का कारण बनता है।

२४ जनवरी १९५४